

दृष्टिबाधितों, बुजुर्गों की गतिशीलता बढ़ाने के लिए बनाया ऐप 'कैनेरी' हुआ लॉन्च

'कैनेरी' इन्डोर नैवीगेशन एप्लीकेशन डॉ मैथ्यू वर्गीस द्वारा फॉर्मूलेट किया गया आइडिया है, जो विशेष रूप से दृष्टिबाधितों और बुजुर्गों की गतिशीलता व स्वतंत्रता को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया सॉल्यूशन है.

- Edited by: [विवेक रस्तोगी](#)
- [मतलब की बात](#)
- अक्टूबर 01, 2024 19:50 pm IST

Read Time: 3 mins



नई दिल्ली:

दृष्टिबाधित लोगों और बुजुर्गों की गतिशीलता और आज़ादी को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए कतई इनोवेटिव समाधान 'कैनेरी' - एक इन्डोर नैवीगेशन एप्लीकेशन - को केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री डॉ वीरेंद्र कुमार ने लॉन्च किया. पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय शारीरिक दिव्यांग संस्थान (PDUNIPPD) में आयोजित कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्यमंत्री बी.एल. वर्मा तथा सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय

के अंतर्गत कार्यरत DePWD के सचिव तथा IAS अधिकारी राजेश अग्रवाल भी उपस्थित थे। मैत्रेयी कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सहयोग से CURE इंडिया द्वारा विकसित यह पहल 'कैनेरी' PDUNIPPD को इन्डोर नैविगेशन के लिए भारत में पहला पूरी तरह सुलभ राष्ट्रीय संस्थान बनाने की दिशा में अहम उपलब्धि है।

'कैनेरी' इन्डोर नैविगेशन एप्लीकेशन डॉ मैथ्यू वर्गीस द्वारा फॉर्मूलेट किया गया आइडिया है, जो विशेष रूप से दृष्टिबाधितों और बुजुर्गों की गतिशीलता व स्वतंत्रता को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया सॉल्यूशन है। NFC और ब्लूटूथ LE बीकन्स के जरिये इन्डोर स्थानों के भीतर स्पष्ट और सुलभ नैविगेशन प्रदान कर 'कैनेरी' यूज़र को जटिल माहौल में भी पूरे आत्मविश्वास के साथ नैविगेट करने में मदद करता है। यह एप्लीकेशन समावेशिता सुनिश्चित करने के लिए अत्याधुनिक फीचरों की मदद से एक्सेसेबिलिटी टेक्नोलॉजी में मौजूद गैप को पाटता है।

इस प्रोजेक्ट को मैत्रेयी कॉलेज के कम्प्यूटर विज्ञान विभाग के सात प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की भागीदारी से विकसित किया गया, जिन्हें CURE इंडिया के श्री एंड्रयूज और मैत्रेयी कॉलेज की डॉ स्मृति सिंह द्वारा प्रशिक्षित किया गया, और उन्हीं के नेतृत्व और मार्गदर्शन में विकास कार्य किया गया। एक्सेसेबिलिटी कन्सल्टेंट के रूप में प्रोजेक्ट का मार्गदर्शन कर रहीं डॉ स्मृति सिंह स्वयं भी पूर्णतः दृष्टिबाधित हैं।

लॉन्च के अवसर पर मैत्रेयी कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ हरितमा चोपड़ा, एनेबलिंग यूनिट के डॉ प्रमोद और CURE इंडिया के निदेशक डॉ संतोष की उपस्थिति में डॉ वीरेंद्र कुमार ने इस अभिनव प्रयास की सराहना की, और कहा, "कैनेरी का विकास दिव्यांगों के जीवन को बेहतर बनाने की हमारी प्रतिबद्धता में अहम कदम है... यह इस बात का अनुकरणीय प्रदर्शन है कि कैसे प्रौद्योगिकी और सहयोग सामाजिक परिवर्तन ला सकते हैं और सभी के लिए अधिक पहुंच को बढ़ावा दे सकते हैं..."

दिव्यांगता की रोकथाम और पुनर्वास के लिए उन्नत समाधानों में अग्रणी CURE इंडिया कैनेरी को सामाजिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के अपने व्यापक मिशन के हिस्से के रूप में देखता है। यह लॉन्च यह सुनिश्चित करने के लिए संगठन की चल रही प्रतिबद्धता को दर्शाता है कि

व्यक्तियों को भौतिक सीमाओं की परवाह किए बिना उन उपकरणों तक पहुंच प्राप्त हो, जो स्वतंत्रता को बढ़ावा देते हैं और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करते हैं.

PDUNIPPD में कैनेरी का लॉन्च भारत की अधिक समावेशिता की यात्रा में अहम पल है, जो इस बात के लिए एक मिसाल कायम करता है कि कैसे प्रौद्योगिकी का उपयोग सुलभ स्थान बनाने के लिए किया जा सकता है. यह पहल नवाचार के माध्यम से वास्तविक दुनिया की समस्याओं के समाधान में शैक्षणिक संस्थानों और संगठनों के बीच साझीदारी की अहमियत पर रोशनी डालती है.

इमारतों के अंदर 'कैनरी' बनेगा दृष्टिबाधितों का सहयोगी

उदय जगताप • जागरण

नई दिल्ली: गंतव्य तक पहुंचने के लिए मार्ग बताने वाले एप दृष्टिबाधितों को उनकी मंजिल तक तो पहुंचा देते हैं, लेकिन इमारतों में उन्हें सीढ़ियां चढ़ने और अलग-अलग स्थानों पर पहुंचने में अक्सर परेशानी आती है।

इससे निजात के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के मैत्रेयी कालेज की दृष्टिबाधित शिक्षिका और छात्रों ने क्योर इंडिया संस्था के साथ मिलकर 'कैनरी' एप तैयार किया है। इसके जरिये भवन में आराम से आया-जाया जा सकता है।

मैत्रेयी कालेज में इस इंडोर नेवीगेशन एप्लिकेशन का उपयोग शुरू हो गया है। इसका शुभारंभ सामाजिक न्याय एवं अधिकारिकता मंत्रालय के मंत्री डा. वीरेंद्र सिंह ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय दिव्यांगजन संस्थान में किया। संस्थान को भी एप्लिकेशन से जोड़ा गया है। मैत्रेयी कालेज की अंग्रेजी विभाग की प्रो. स्मृति सिंह ने कहा कि मैं दृष्टिबाधित हूं। कालेज में घूमने के दौरान परेशानी होती थी। इसलिए हर विभाग के बाहर बार कोड लगाए थे। उसके निर्देशों के आधार पर मैं कालेज में जाया करती थी। मैं अस्पताल जाती थी। तब डाक्टर से चर्चा हुई और हमने भवनों के अंदर दृष्टिबाधितों की सहायता के लिए एप बनाने का विचार किया। क्योर इंडिया के डा. मैथ्यूज वर्गीज ने बताया कि जब प्रो. स्मृति ने उन्हें क्यूआर कोड की बात बताई तो उन्हें लगा कि ऐसी तकनीक खोजी जा सकती है, जिसके जरिये भवनों में घूमा जा सके। तब उन्होंने क्योर इंडिया के निदेशक डा. सैंथोष जार्ज के साथ मिलकर एप तैयार किया। इसके इस्तेमाल के लिए भवन का पहले इंडोर नक्शा बनाना जरूरी है। बीकन



कैनरी एप के जरिये पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय दिव्यांगजन संस्थान में घूमते केंद्रीय मंत्री डा. वीरेंद्र सिंह • सौजन्य कालेज

की बात बताई तो उन्हें लगा कि ऐसी तकनीक खोजी जा सकती है, जिसके जरिये भवनों में घूमा जा सके। तब उन्होंने क्योर इंडिया के निदेशक डा. सैंथोष जार्ज के साथ मिलकर एप तैयार किया। इसके इस्तेमाल के लिए भवन का पहले इंडोर नक्शा बनाना जरूरी है। बीकन

की बात बताई तो उन्हें लगा कि ऐसी तकनीक खोजी जा सकती है, जिसके जरिये भवनों में घूमा जा सके। तब उन्होंने क्योर इंडिया के निदेशक डा. सैंथोष जार्ज के साथ मिलकर एप तैयार किया। इसके इस्तेमाल के लिए भवन का पहले इंडोर नक्शा बनाना जरूरी है। बीकन

की बात बताई तो उन्हें लगा कि ऐसी तकनीक खोजी जा सकती है, जिसके जरिये भवनों में घूमा जा सके। तब उन्होंने क्योर इंडिया के निदेशक डा. सैंथोष जार्ज के साथ मिलकर एप तैयार किया। इसके इस्तेमाल के लिए भवन का पहले इंडोर नक्शा बनाना जरूरी है। बीकन

दृष्टिबाधित लोगों को घूमने में आत्मनिर्भर बनाना ही उद्देश्य

मोबाइल के साफ्टवेयर को बीकन डिवाइस से जोड़कर एप तैयार किया गया है, जो पूरे भवन का रास्ता बताता है। इसमें जरूरी है कि मोबाइल का वाइस ओवर चालू रहना चाहिए। यह एप्लिकेशन मुफ्त है और इसे आसानी से डाउनलोड किया जा सकता है। कम खर्च में यह सुविधा दृष्टिबाधित लोगों को दी जा सकती है। प्रो. स्मृति ने कहा कि इसका उद्देश्य दृष्टिबाधित लोगों को घूमने में आत्मनिर्भर बनाना है। जैसे कई भवनों में ब्रेल से लिखा होता है और ट्रेनों में भी ब्रेल लिपि का उपयोग हो रहा है। ऐसे मामलों में एप बहुत मददगार साबित होगा। मैत्रेयी कालेज की समाजशास्त्र विभाग में सहायक प्राध्यापक डा. बबीता चौधरी ने कहा कि एप को तैयार करने में कंप्यूटर साइंस विभाग की छात्राओं शीरीन, तन्वी सिंह, हरवीन कौर, ताविषी अटवाल, तान्या पंवार, मुंजल शर्मा और हिना की प्रमुख भूमिका रही है।

डिवाइस महत्वपूर्ण है। यह डिवाइस सस्ती होती है और इसे भवन के ऊपर लगाया जा सकता है। साथ ही यह पांच साल तक काम कर सकती है। ब्लू टूथ के जरिये इसे अपने मोबाइल से जोड़ा जा सकता है। जिसके बाद यह सुगमता से काम करता है।

डिवाइस महत्वपूर्ण है। यह डिवाइस सस्ती होती है और इसे भवन के ऊपर लगाया जा सकता है। साथ ही यह पांच साल तक काम कर सकती है। ब्लू टूथ के जरिये इसे अपने मोबाइल से जोड़ा जा सकता है। जिसके बाद यह सुगमता से काम करता है।

No public prop-
rative unless police
alleged.
on was available
ce.

...s bail,
...ay in
...long
...nment

S NETWORK

illed former he-
of Delhi, Saty-
a Saturday so-
g a delay in the
and a long pe-
ment.
ing submis-
ED and Jain's
ial court re-
on his bail
laundering
o pronounce
5.
ate N Hariha-
vocate Vivek
r Satyander
ted that the-
sion of Jain
esses and
flight risk.
rgued that
Informa-
was regis-
er five ye-
osecution
e further
e CBI has
ceeds of
27 crore,
68 crore,
riharan
vestigate
n CBI sa-
tuled of-
as a gro-
n counsel sa-
vestiga-
ars. The
med."
argued
was in
and was
Kavitha
even as
study for
counsel
in, oppo-
and said
core POC.
claim, he
delay was
ed persons
urnments.
d been coo-
be at an ad-
al," he said.

A flight towards making freedom a reality for the visually impaired

Meghna.Dhulia
@timesofindia.com

New Delhi: Imagine a visually impaired student sure-footedly navigating a college corridor, aware of her surroundings and obstacles by just listening to the navigation data streaming in from an app on her smartphone.

The vision of making visually impaired people sense their surroundings better with the help of tech is a reality at Pandit Deen Dayal Upadhyaya National Institute for Persons with Physical Disabilities. The app that does the trick is Canary. It does not sing, but it talks. Anyone who uses the app gets voice messages in their earphones that give navigation data about nearby surroundings in an indoor space. The app does this by using technologies like near-field communication and Bluetooth low-energy beacons, which are devices that broadcast to nearby portable electronic devices.

Behind the app is the work of seven women students of Delhi University's Maitreyi College. They worked with Dr Mathew Varghese, who conceptualised the idea, and the non-profit CURE India.

Varghese explained with an example why the visually impaired needed an app for indoor spaces. "When you board a Vande Bharat train, you'll find Braille labels on the doors between compartments. However, a visually impaired person still needs assistance to locate these writings. Our project aims to eliminate this dependence (on others). We needed a system that would automatically guide a visually impaired person," he said.

The app is designed to enhance the mobility and independence of, particularly, the visual impaired and the elderly. The seven students — Shi-



MOVE FREELY: Behind the app is the work of seven women students of Delhi University's Maitreyi College

reen, Tanvi Singh, Harveen Kaur, Tavishi Athwal, Taniya Panwar, Munjal Sharma, and Heena — got training and guidance from Andrews Angels, the chief product officer at CURE India, along with support from Dr Smriti Singh, an accessibility consultant at the college who is completely visually impaired.

Tanvi said she was "involved in drawing maps of the building and converting them into 3D. Then we went and installed beacons at various spots. There were various rounds of testing." said Tanvi, a BA in political science (H) student. Tavishi, pursuing sociology (H), said that she had "worked on the mobile user interface and mapped out the user experience. I had to work on how the app looks and how easy it is to use."

Dr Babita Chaudhary, assistant professor in the department of sociology at Maitreyi College, was involved in spreading awareness about the app.

Canary's recent launch at Pandit Deen Dayal Upadhyaya National Institute for Persons with Physical Disabiliti-



es has made the campus the first fully accessible national institute in India for indoor navigation. The app will be installed next at Maitreyi, where trials are on.

"Our goal is to expand to malls and restaurants. Many of us take every day conveni-

ences for granted, often overlooking the needs of people with disabilities. I constantly struggle with obstacles, like bumping into fire extinguishers. Only those facing these challenges can provide valuable insights to developers. They have considered many such factors. A system that alerts me to obstructions in advance would be incredibly helpful," Singh said.

The app addresses a critical gap and leverages cutting-edge features to ensure inclusivity. "Along with the area we intend to cover, all the obstructions are also mapped. It takes several levels of testing to get clear results," Angels said.

Why did the team name the app Canary?

"Canaries were taken by miners into tunnels as a safety measure. If dangerous gases, like carbon monoxide, were present, the bird would die before the miners, providing an early warning. We see this app as a similar safeguard. It is designed to protect the visually impaired and the elderly," Angels said.